सभ्यता अध्ययन केन्द्र
Center for Civilisational Studies
एवं
पंजाबी विभाग, दयाल सिंह महाविद्यालय (सांध्य)
के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित
सिख गुरुओं की राष्ट्रीय दृष्टि
पुस्तक लोकार्पण
सिख गुरुओं की राष्ट्रीय दृष्टि
मुख्य अतिथि
डॉ. इकबाल सिंह लालपुरा
अध्यक्ष
राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग
सम्मानित अतिथि
श्री तरुण चुघ
महासचिव
भारतीय जनता पार्टी
विशिष्ट अतिथि
श्री परमजीत सिंह चंडोक
मुख्य सलाहकार, दिल्ली सिख गुरुद्वारा मैनेजमेंट कमिटी
अध्यक्षता
प्रो. जगबीर सिंह
कुलाधिपति
पंजाब केंद्रीय विश्वविद्यालय
सान्निध्य
डॉ. भावना पाण्डेय
प्रधानाचार्य
दयाल सिंह (सांध्य) महाविद्यालय
विषय प्रवेश
श्री रवि शंकर
संपादक, गगनांचल एवं
निदेशक, सभ्यता अध्ययन केन्द्र
संचालन
डॉ. अरुण प्रकाश
दार्शनिक - निबंधकार
बुधवार, 04 सितंबर, 2024, 3.00 अपराह्न से 5.00 बजे सायं
दयाल सिंह महाविद्यालय सभागार, लोधी रोड, नई दिल्ली
निकटतम मेट्रो स्टेशन- जवाहर लाल नेहरु स्टेडियम (गेट नं. 05)
प्रो. पृथ्वीराज थापर (9818411018)
श्री अमित दत्ता (7053091652)
श्री धीप्रज्ञ द्विवेदी (7011120200)
ईमेल : civilisationalstudies@gmail.com, फेसबुक : https://www.facebook.com/civilisationalstudies
वेब : https://civilisationalstudies.org/, यूट्यूब : https://www.youtube.com/@civilisationalstudies

<u>परिणाम प्रतिवेदन</u>

“सिख गुरुओं की राष्ट्रीय दृष्टि” पुस्तक लोकार्पण

<u>आयोजक</u>

सभ्यता अध्ययन केंद्र

<u>स्थान</u>

दयाल सिंह महाविद्यालय सभागार,लोधी रोड़, नई दिल्ली

<u>तिथि/समय</u>

04 सितंबर, 2024/ 3.00 अपराह्न से 05 बजे सायं

क्रम सूची

1. परिचय	04
2. पुस्तक परिचय	05
3. अतिथियों के शब्दों में	06
4. सम्मान समारोह	07-12
5. आयोजक (CCS) एवं परिणाम	13
6. मीडिया कवरेज	14-16
7. धन्यवाद	17

परिचय

सभ्यता अध्ययन केंद्र द्वारा सिख साहित्य के अनुपम विद्वान रहे स्व. राजेंद्र सिंह जी की लिखी तथा संकलित पुस्तक **सिख गुरुओं की राष्ट्रीय दृष्टि** नामक एक पुस्तक प्रकाशित की गई है। 04 सितंबर, 2024 को इसका लोकार्पण कार्यक्रम दयाल सिंह सांध्य महाविद्यालय में संपन्न हुआ। पुस्तक का लोकार्पण अल्पसंख्यक आयोग के अध्यक्ष सरदार इकबाल सिंह लालपुरा जी, दिल्ली सिख गुरुद्वारा प्रबंध कमिटि के मुख्य सलाहकार श्री परमजीत सिंह चंडोक जी ने किया तथा पंजाब केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलाधिपति प्रो. जगबीर सिंह जी ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की।

□□□□□□ □□ □□□□ □□□

इस पुस्तक का मूल भाव है कि सिख समाज भारत का एक अभिन्न अंग रहा है। प्रथम गुरु नानकदेव जी ने भारत को एक समग्र इकाई के रूप में प्रस्तुत किया था। वे पूरे भारत को एक समग्र रूप में देखते थे और तदनुरूप ही उन्होंने विधर्मी आक्रांताओं और उनके अत्याचारों का वर्णन किया। आज के विभाजनकारी दौर में गुरु नानकदेव की शिक्षाओं का पुनर्स्मरण करने की आवश्यकता है। इस बात को ध्यान में रख कर ही प्रस्तुत पुस्तक लिखी गई है। पुस्तक के लेखक स्व. राजेंद्र सिंह जी सिख साहित्य के अप्रतिम विद्वान थे और उहोंने श्रीराम जन्मभूमि मामले में सर्वोच्च न्यायालय में गवाही देते हुए सिख साहित्य में श्रीराम जन्मभूमि का उल्लेख होने के प्रमाण प्रस्तुत किये थे।

श्री राजेन्द्र सिंह की पुस्तक "सिक्ख गुरुओं की राष्ट्रीय दृष्टि" उपरोक्त संदर्भ को दृष्टि में रखते हुए गुरु परंपरा एवं सिक्ख पंथ के ज्ञान ग्रंथों का विवेचन करने की ओर संकेतित करती है। यह एक संकलित एवं संपादित रचना है जिसके लेखक श्री राजेंद्र सिंह और मुख्य संपादक श्री रवि शंकर है । इस पुस्तक में सिख गुरुओं के जीवन वृतांत, दार्शनिक चिंतन एवं आध्यात्मिक संदेश को राष्ट्रीय चेतना के संदर्भ में रखकर देखने का प्रयत्न किया गया है। यह प्रयास आज के संदर्भ में बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि आज कुछ देशविरोधी शक्तियां अलगाववाद के भ्रामिक नेरेटिव की सहायता से सिक्खी और सनातन धर्म के सदियों पुराने रिश्तों में दरार पैदा करने की चेष्टा कर रहे हैं ।

यह एक ऐतिहासिक तथ्य हैं कि सिक्खी का हिन्दू समाज और सनातन धर्म के साथ बहुत गहरा रिश्ता है । यह रिश्ता सामाजिक भी है और सांस्कृतिक भी, धार्मिक भी है और दार्शनिक भी । यह पुस्तक हिन्दू और सिखों को बाँटने वाली संकीर्ण राजनीति का प्रत्युत्तर प्रस्तुत करती है । इसी मंतव्य को सामने रखकर लेखक ने गुरु परम्परा और सिख पंथ की विरासत का अध्ययन और विश्लेषण करने की चेष्टा की है जो बेहद सार्थक और प्रासंगिक है।

पुस्तक में कुल 14 अध्याय हैं जिन में सिख गुरुओं की वाणी, उनके सर्वोच्च बलिदान तथा उनके जीवन से संबंधित महत्वपूर्ण घटनाओं और सामाजिक संस्थाओं का विवेचन किया गया है । पुस्तक में शामिल 10 अध्याय लेखक की अपनी रचना हैं और 4 अध्याय अन्य महत्वपूर्ण लेखकों की रचनाओं का अनुवाद हैं।

[illegible]..

[illegible] ([illegible], [illegible])

सनातन, जैन, बौद्ध और सिख, इन सभी की माँ एक है, लेकिन अंग्रेजों ने सिख और सनातन में फूट डालने का षड्यंत्र कर समाज में भेद पैदा किया। उन्होंने कहा कि गुरुग्रंथ साहिब में लिखा है कि प्रथम गुरु नानक देव जी भगवान विष्णु के ही अवतार हैं। इसलिए गुरु केवल सिखों के नहीं, पूरे भारत के हैं। इस पुस्तक का नाम सिख गुरुओं की राष्ट्रीय दृष्टि है, परंतु मेरे विचार में चूँकि गुरु केवल सिखों के नहीं हैं, वे पूरे भारतवर्ष के हैं और इसलिए इसका नाम गुरुओं की राष्ट्रीय दृष्टि रखा जाना चाहिए। गुरुओं ने उस काल में जब देश पर विधर्मी आक्रांताओं का आक्रमण हो रहा था, राष्ट्र का मार्गदर्शन किया था। आज भी उनकी शिक्षा से देश तथा पूरे विश्व को मार्गदर्शन प्राप्त हो सकता है। यह पुस्तक इसमें सहायक होगी।

परमजीत सिंह चंडोक (मुख्य सलाहकार, दिल्ली सिख गुरुद्वारा मैनेजमेंट कमिटी)

इस अवसर पर परमजीत सिंह चंडोक जी ने कहा कि गुरुओं ने मानवता का संदेश दिया और खालसा पंथ की स्थापना की। देश में पहली बार ऐसी सरकार आई है, जो गुरुओं के दिवसों का उत्सव आयोजित कर रही है। देश की स्वाधीनता के 75 वर्षों में पहली बार इसी सरकार ने करतारपुर साहिब कॉरिडोर खोलकर वहाँ तक आम जन की पहुँच को सुगम बनाया।

प्रो. जगबीर सिंह (कुलाधिपति, पंजाब केंद्रीय विश्वविद्यालय)

सिख और सनातन हमेशा से एक रहे हैं। बंदा बहादुर और राजा रणजीत सिंह तक हम एक रहे हैं। बाद में अंग्रेजों ने हमें अलग करने का षड्यंत्र किया। उन्होंने काहन सिंह नाभा जैसे लोग खड़े किये, जिन्होंने आधे-अधूरे उद्धरणों से फूट डालने का कार्य किया। यह पुस्तक इन सभी षड्यंत्रों का उन्मूलन करती है। इस पुस्तक में गुरुओं के विचारों को राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत किया गया है, जो कि आज काफी प्रासंगिक और सार्थक हैं।

□□□□□□ □□□□□□

इस लोकार्पण कार्यक्रम में जीवन के विविध आयामों में समाज के लिए उल्लेखनीय योगदान के लिए सिख समाज के **14 महत्त्वपूर्ण व्यक्तित्वों को सम्मानित भी किया गया**।सम्मानित होने वाले महानुभावों में **उत्कृष्ट श्रेणि में** -

1.**श्री यदविंदर सिंह** (शहीद ए आजम भगत सिंह के प्रपौत्र)

अध्यक्ष, ऑल इंडिया भगत सिंह ब्रिगेड : इन्होंने शहीद ए आजम भगत सिंह की जेल डायरी का प्रकाशन मै. संधु एंड आर्गेनाइजेशन के प्रयास से प्रकाशित पुस्तक प्रकाशित की है।

2. **श्रीमती रंजीत कौर** धर्म पत्नी स्वर्गीय राजेंद्र सिंह जी। स्वास्थ्य कारणों से वे स्वयं उपस्थित नहीं हो पाईं। उनके बदले में उनके पुत्र श्री इंद्रजीत सिंह ने सम्मान ग्रहण किया।

विशिष्ट श्रेणी वर्ग में -

1. डॉ.सुरजीत कौर, पूर्व प्राचार्य, SPM कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय - इन्होंने शिक्षा और समाज के उन्नयन के लिए विशिष्ठ कार्य किया। उन्हें अनेक प्रतिष्ठित पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है। उन्हें अनेक संस्थाओं और संगठनों द्वारा प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। इनके अनेक शोध लेख राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं।

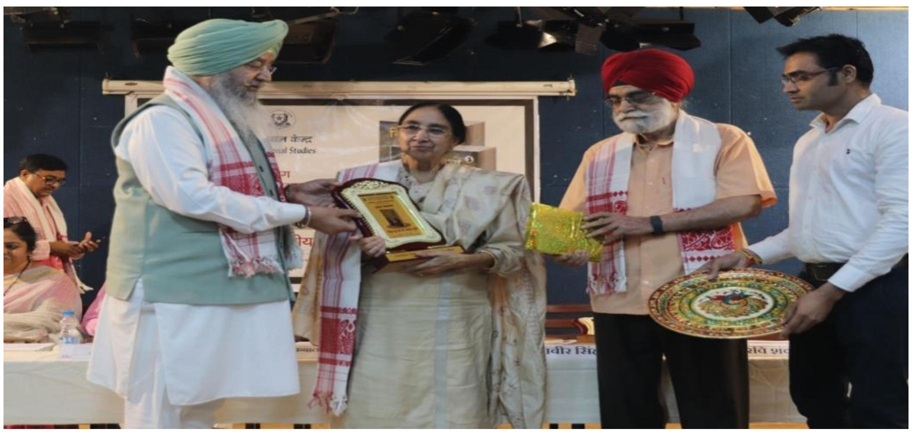

2. **डॉ. हरबंस कौर,** निदेशक सिख इतिहास एवं गुरबाणी फोरम (DSGMC) : इन्होंने पंजाबी में 30 पुस्तके लिखी, इनकी 12 पुस्तकें अंग्रेजी में प्रकाशित हुई हैं इनके 100 शोध लेख प्रकाशित हुए है। लगभग 12 टी वी कार्यक्रमों में इन्होंने भाग लिया है। इन्हे अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है। कुछ एक के नाम प्रस्तुत हैं पंजाब एकेडमी अवार्ड, बाबा बंदा बहादुर सिंह मेमोरियल अवार्ड और अन्य पुरस्कार।

3. **श्री इंद्र देव सिंह मुसाफिर**, (सुप्रसिद्ध व्यवसायी): आप फुटवियर के व्यवसाई हैं । मुसाफिर फुटवियर से संबंधित सरकारी काउंसिल के सदस्य रह चुके हैं।

4. **जस्टिस गुरिंदर सिंह** (से नि) दिल्ली हाई कोर्ट : आप दिल्ली है कोर्ट में न्यायाधीश रहे हैं। बड़ी निष्ठा और न्याय के पथ पर आपका योगदान स्मरणीय है।

5. **पद्मश्री जितेंद्र सिंह शंटी**, संस्थापक शहीद भगत सिंह सेवा दल : शांति जी का जीवन उन सभी की सेवा में तत्पर है जिन्हें उनकी आवश्यकता है। शंटी जी लावारिश मृतकों के अंतिम संस्कार करता के रूप में प्रसिद्ध हैं। कोरिया काल में उनके द्वारा जो पीढ़ित मानवता की सेवा उन्होंने की वह अद्वितीय है। उन्होंने 4400 मृतकों का अंतिम संस्कार कर अपने कर्तव्य का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया। भारत सरकार द्वारा उन्हें पद्मश्री से सम्मानित किया।

6. **श्री आर पी सिंह**, पूर्व विधायक एवं समाज सेवी

7. **श्री बलदेव सिंह ढिल्लो**, समाज सेवी: बलदेव सिंह जी समाज के है क्षेत्र में जन हित के कार्यों में हर समय अपना योगदान देते हैं।

8. **श्री गुरमीत सिंह** लेखक एवं ज्योतिषी : आप का अंक शास्त्र और ज्योतिष ज्ञान का लाभ आम जनता को बराबर मिलता रहता है।

9. **युवा नेता रणधीर सिंह कालेर** : आप संगरूर में बहुत सामाजिक कार्यों से जुड़े हुए है। मालवा क्षेत्र में इनकी पहचान युवा नेता के रूप में कर रहे हैं। उनसे समाज को बहुत आशाएं हैं।

10.**अर्जुन पाल सिंह मारवाह**: आप एक समाजसेवी हैं तथा लाजपत नगर में पार्षद के रूप में आम जनता को सेवाएं दे रहे हैं।

आयोजक

सेंटर फॉर सिविलाइजेशनल स्टडीज यानी सभ्यता अध्ययन केंद्र एक दिल्ली स्थित शोध संस्थान है। यह एक पंजीकृत पब्लिक चैरिटेबल ट्रस्ट है। केंद्र द्वारा दिल्ली, राजस्थान, हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, बिहार और झारखंड में अध्ययन केंद्र चलाए जा रहे हैं। केंद्र ने गत छह वर्षों में पचास से अधिक व्याख्यानों, गोष्ठियों और कार्यशालाओं का आयोजन किया है। कोरोनाकाल के विकट अवसर पर केंद्र ने विभिन्न विषयों पर प्रथम लॉकडाउन से लेकर आज तक सौ से अधिक वेबिनारों का आयोजन किया है। केंद्र द्वारा सभ्यता संवाद नामक एक त्रैमासिक शोध पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है। साथ ही केंद्र ने आठ पुस्तकें भी प्रकाशित की हैं तथा कई अन्य पुस्तकें प्रकाशनाधीन हैं।

परिणाम

कार्यक्रम में दिल्ली गुरुद्वारा प्रबंध कमिटी, राष्ट्रीय सिख संगत के पदाधिकारियों तथा सदस्यों सहित बड़ी संख्या में सिख समाज के महत्त्वपूर्ण लोग उपस्थित थे। इस कार्यक्रम से पुस्तक के विषय सिख तथा सनातन के अंतर्संबंधों के प्रति सभी को

□□□□□□ □□□□□

अंग्रेजों ने किया सिखों को सनातन से लड़ाने का षड्यंत्र : लालपुरा

सिख गुरुओं की राष्ट्रीय दृष्टि नामक पुस्तक का लोकार्पण

सनातन, जैन, बौद्ध और सिख, इन सभी की मां एक है, लेकिन अंग्रेजों ने सिख और सनातन में फूट डालने का षड्यंत्र कर समाज में भेद पैदा किया। यह कहना है कि राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग के अध्यक्ष डॉ. इकबाल सिंह लालपुरा का। बुधवार को दिल्ली में आयोजित सिख गुरुओं की राष्ट्रीय दृष्टि नामक पुस्तक के लोकार्पण में लालपुरा ने यह बातें कहीं। उन्होंने कहा कि गुरुग्रंथ साहिब में लिखा है कि प्रथम गुरु नानक देव जी भगवान विष्णु के ही अवतार हैं। इसलिए गुरु केवल सिखों के नहीं, पूरे भारत के हैं। सिख साहित्य के अनुपम विद्वान रहे स्व. राजेंद्र सिंह की लिखी तथा संकलित पुस्तक सिख गुरुओं की राष्ट्रीय दृष्टि का लोकार्पण बुधवार को सरदार दयाल सिंह सांध्य महाविद्यालय में संपन्न हुआ। पुस्तक का लोकार्पण डॉ. इकबाल सिंह लालपुरा, दिल्ली सिख गुरुद्वारा मैनेजमेंट कमिटी के मुख्य सलाहकार सरदार परमजीत सिंह चंडोक ने किया तथा पंजाब केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलाधिपति प्रो. जगबीर सिंह ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। इस अवसर पर परमजीत सिंह चंडोक ने कहा कि गुरुओं ने मानवता का संदेश दिया और खालसा पंथ की स्थापना की। देश में पहली बार ऐसी सरकार आई है, जो गुरुओं के दिवसों का उत्सव आयोजित कर रही है। देश की स्वाधीनता के 75 वर्षों में पहली बार इसी सरकार ने करतारपुर साहिब कॉरिडोर खोलकर वहां तक आम जन की पहुंच को सुगम बनाया। वहीं, पंजाब केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलाधिपति प्रो. जगबीर सिंह ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि बंदा बहादुर और राजा रणजीत सिंह तक हम एक रहे हैं। बाद में अंग्रेजों ने हमें अलग करने का षड्यंत्र किया। उन्होंने काहन सिंह नाभा जैसे लोग खड़े किये, जिन्होंने आधे-अधूरे उद्धरणों से फूट डालने का कार्य किया। यह पुस्तक इन सभी षड्यंत्रों का उन्मूलन करती है। इस पुस्तक का मूल भाव है कि सिख समाज भारत का एक अभिन्न अंग रहा है। प्रथम गुरु नानकदेव जी ने भारत को एक समग्र इकाई के रूप में प्रस्तुत किया था। वे पूरे भारत को एक समग्र रूप में देखते थे और तदनुरूप ही उन्होंने विधर्मी आक्रांताओं और उनके अत्याचारों का वर्णन किया। आज के विभाजनकारी दौर में गुरु नानकदेव की शिक्षाओं का पुनस्मरण करने की आवश्यकता है। इस बात को ध्यान में रख कर ही प्रस्तुत पुस्तक लिखी गई है। पुस्तक के लेखक स्व. राजेंद्र सिंह जी सिख साहित्य के अप्रतिम विद्वान थे और उन्होंने श्रीराम जन्मभूमि मामले में सर्वोच्च न्यायालय में गवाही देते हुए सिख साहित्य में श्रीराम जन्मभूमि का उल्लेख होने के प्रमाण प्रस्तुत किये थे। इस लोकार्पण कार्यक्रम में जीवन के विविध आयामों में समाज के लिए उल्लेखनीय योगदान के लिए सिख समाज के 14 महत्वपूर्ण व्यक्तित्वों को सम्मानित भी किया गया।

| अंग्रेजों ने किया सिखों को सनातन से लड़ाने का षड्यंत्रः सरदार इकबाल सिंह

04 Sep 2024 22:46:31

नई दिल्ली, 04 सितम्बर (हि.स.)। सनातन, जैन, बौद्ध और सिख, इन सभी की मां एक है, लेकिन अंग्रेजो ने सिख और सनातन में फूट डालने का षड्यंत्र कर समाज में भेद पैदा किया। जबकि गुरुग्रंथ साहिब में लिखा है कि प्रथम गुरु नानक देव जी भगवान विष्णु के ही अवतार हैं। इसलिए गुरु नानक जी सिर्फ सिखो के नहीं, पूरे भारत के हैं। यह बातें राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग के अध्यक्ष डॉ इकबाल सिंह लालपुरा ने बुधवार को

अंग्रेजों ने किया सिखों को सनातन से लड़ाने का षड्यंत्रः सरदार इकबाल सिंह

■ 'सिख गुरुओं की राष्ट्रीय दृष्टि' पुस्तक का हुआ लोकार्पण

नई दिल्ली। राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग के अध्यक्ष सरदार इकबाल सिंह लालपुरा ने कहा कि अंग्रेजों ने सिखों को सनातन से लड़ाने का षड्यंत्र किया है। उन्होंने कहा कि सनातन, जैन, बौद्ध और सिख, इन सभी की मां एक है। हालांकि अंग्रेजों ने सिख और सनातन में फूट डालने का षड्यंत्र कर समाज में भेद पैदा किया। यह बात लालपुरा ने बुधवार को नई दिल्ली में आयोजित 'सिख गुरुओं की राष्ट्रीय दृष्टि' नामक पुस्तक के लोकार्पण समारोह के दौरान कही। यह पुस्तक सिख साहित्य के अनुपम विद्वान रहे स्वर्गीय राजेंद्र सिंह ने लिखी थी। इसका लोकार्पण सरदार दयाल सिंह सांध्य महाविद्यालय में संपन्न हुआ। लोकार्पण समारोह में दिल्ली सिख गुरुद्वारा मैनेजमेंट कमेटी के मुख्य सलाहकार सरदार परमजीत सिंह चंडोक और पंजाब केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलाधिपति प्रो. जगबीर सिंह ने भी शिरकत की। इस मौके पर सरदार इकबाल सिंह लालपुरा ने कहा कि गुरुग्रंथ साहिब में लिखा है कि प्रथम गुरु नानक देव जी भगवान विष्णु के ही अवतार हैं। इसलिए गुरु केवल सिखों के नहीं, पूरे भारत के हैं। वहीं, परमजीत सिंह चंडोक ने कहा कि गुरुओं ने मानवता का संदेश दिया और खालसा पंथ की स्थापना की। देश में पहली बार ऐसी सरकार आई है, जो गुरुओं के दिवसों का उत्सव आयोजित कर रही है। देश की स्वाधीनता के 75 वर्षों में पहली बार इसी सरकार ने करतारपुर साहिब कॉरिडोर खोलकर वहां तक आमजन की पहुंच को सुगम बनाया। जबकि पंजाब केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलाधिपति प्रो. जगबीर सिंह ने कहा कि बंदा बहादुर और राजा रणजीत सिंह तक हम एक रहे हैं। बाद में अंग्रेजों ने हमें अलग करने का षड्यंत्र किया।

अंग्रेजों ने सिखों को सनातन से लड़वाने का रचा षड्यंत्र, किताब की लॉन्चिंग में बोले सरदार इकबाल सिंह

सिख साहित्य के विद्वान रहे स्व. राजेंद्र सिंह की लिखी तथा संकलित पुस्तक सिख गुरुओं की राष्ट्रीय दृष्टि का लोकार्पण बुधवार को सरदार दयाल सिंह सांध्य महाविद्यालय में हुआ।

Madan Tiwari • लाइव हिन्दुस्तान, नई दिल्ली
Wed, 4 Sep 2024 07:45 PM

हमें फॉलो करें

सनातन, जैन, बौद्ध और सिख इन सभी की मां एक है, लेकिन अंग्रेजों ने सिख और सनातन में फूट डालने का षड्यंत्र कर समाज में भेद पैदा किया। ये बातें बुधवार को राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग के

अंग्रेजों ने किया सिखों को सनातन से लड़ाने का षड्यंत्र

Published: September 5, 2024 | 6:02 am
Media Scan

सनातन, जैन, बौद्ध और सिख, इन सभी की माँ एक है, लेकिन अंग्रेजों ने सिख और सनातन में फूट डालने का षड्यंत्र कर समाज में भेद पैदा किया। ये बातें आज राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग के अध्यक्ष डॉ. इकबाल सिंह लालपुरा जी ने आज नई दिल्ली में आयोजित सिख गुरुओं की राष्ट्रीय दृष्टि नामक पुस्तक के लोकार्पण में कहीं।

गुरुओं ने मानवता का संदेश दिया और खालसा पंथ की स्थापना की : चंडोक

सिख गुरुओं की राष्ट्रीय दृष्टि नामक पुस्तक का लोकार्पण

नई दिल्ली 4 सितम्बर (ब्यूरो) : राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग के अध्यक्ष डॉ. इकबाल सिंह लालपुरा ने आज यहां कहा कि सनातन, जैन, बौद्ध और सिख, इन सभी की मां एक है, लेकिन अंग्रेजों ने सिख और सनातन में फूट डालने का षड्यंत्र कर समाज में भेद पैदा किया। उन्होंने कहा कि गुरु ग्रंथ साहिब में लिखा है कि प्रथम गुरु नानक देव जी भगवान विष्णु के ही अवतार हैं। इसलिए गुरु केवल सिखों के नहीं, पूरे भारत के हैं।

इस मौके पर डॉ. इकबाल सिंह लालपुरा ने सिख गुरुओं की राष्ट्रीय दृष्टि नामक पुस्तक का लोकार्पण भी किया। सिख साहित्य के विद्वान स्व. राजेंद्र सिंह की लिखी तथा संकलित पुस्तक सिख गुरुओं की राष्ट्रीय दृष्टि का लोकार्पण सरदार दयाल सिंह सांध्य महाविद्यालय में संपन्न हुआ। इस मौके पर दिल्ली सिख गुरुद्वारा मैनेजमेंट कमिटी के मुख्य सलाहकार परमजीत सिंह चंडोक, पंजाब केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलाधिपति प्रो. जगबीर सिंह आदि मौजूद रहे।

कार्यक्रम में जीवन के विविध आयामों में समाज के लिए उल्लेखनीय योगदान के लिए सिख समाज के 14 महत्त्वपूर्ण व्यक्तित्वों को सम्मानित भी किया गया। इसमें यदविंदर सिंह (शहीद ए आजम भगत सिंह के प्रपौत्र), रंजीत कौर धर्म पत्नी स्वर्गीय राजेंद्र सिंह, डॉ. सुरजीत कौर, पूर्व प्राचार्य, एसपीएम कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, डॉ. हरबंस कौर निदेशक, सिख इतिहास एवं गुरबाणी फोरम, इंद्र देव सिंह मुसाफिर,जस्टिस गुरिंदर सिंह (से नि) दिल्ली हाई कोर्ट, पद्मश्री जितेंद्र सिंह शंटी, संस्थापक शहीद भगत सिंह सेवा दल,आर पी सिंह, पूर्व विधायक एवं समाजसेवी, बलदेव सिंह ढिल्लो, समाज सेवी, गुरमीत सिंह लेखक एवं ज्योतिष, रणधीर सिंह कालेर, अर्जुन पाल सिंह मारवाह शामिल थे।

नवोदय टाइम्स Thu, 05 September 2024
https://epaper.navodayatimes.in/c/75788606

Historical relationship between Sikhs and Sanatan: सिखों और सनातन धर्म के बीच विभाजन की साजिश अंग्रेजों का षड्यंत्र

Published September 4, 2024By Manish Kumar

नई दिल्ली: सिख और सनातन धर्म के बीच भेदभाव पैदा करने की साजिश अंग्रेजों ने की थी। इसका उद्देश्य भारतीय समाज में विभाजन पैदा करना था, जो आज भी सिख और सनातन समाज के बीच अविश्वास का कारण बनता है। इस मुद्दे पर राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग के अध्यक्ष, डॉ. इकबाल सिंह लालपुरा ने एक महत्वपूर्ण वक्तव्य दिया। वह नई दिल्ली में आयोजित "सिख गुरुओं की राष्ट्रीय दृष्टि" नामक पुस्तक के लोकार्पण समारोह में बोल रहे थे। इस पुस्तक का

अंग्रेजों ने किया...

September 04, 2024 • Public Ki Shatabdi

अंग्रेजों ने किया सिखों को सनातन से लड़ाने का षड्यंत्र : सरदार इकबाल सिंह

कुलवंत कौर, संवाददाता

नई दिल्ली। सनातन, जैन, बौद्ध और सिख, इन सभी की माँ एक है, लेकिन अंग्रेजों ने सिख और सनातन में फूट डालने का षड्यंत्र कर समाज में भेद पैदा किया। ये बातें आज राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग के अध्यक्ष डॉ. इकबाल सिंह लालपुरा जी ने आज नई दिल्ली में आयोजित सिख गुरुओं की राष्ट्रीय दृष्टि नामक पुस्तक के लोकार्पण में कहीं। उन्होंने कहा कि गुरुग्रंथ साहिब में लिखा है कि प्रथम गुरु नानक देव जी भगवान विष्णु के ही अवतार हैं। इसलिए गुरु केवल सिखों के नहीं, पूरे भारत के हैं।

लोकार्पण सिख गुरुओं की राष्ट्रीय दृष्टि नामक पुस्तक का लोकार्पण

सिखों को सनातन से लड़ाने की साजिश अंग्रेजों की थी: लालपुरा

वैभव न्यूज़ ■ नई दिल्ली

सनातन, जैन, बौद्ध और सिख, इन सभी की मां एक है, लेकिन अंग्रेजों ने सिख और सनातन में फूट डालने का षड्यंत्र कर समाज में भेद पैदा किया। यह कहना है कि राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग के अध्यक्ष डॉ. इकबाल सिंह लालपुरा का। बुधवार को दिल्ली में आयोजित सिख गुरुओं की राष्ट्रीय दृष्टि नामक पुस्तक के लोकार्पण में लालपुरा ने यह बातें कहीं। उन्होंने कहा कि गुरुग्रंथ साहिब में लिखा है कि प्रथम गुरु नानक देव जी भगवान विष्णु के ही अवतार हैं। इसलिए गुरु केवल सिखों के नहीं, पूरे भारत के हैं। सिख साहित्य के अनुपम विद्वान रहे स्व. राजेंद्र सिंह की लिखी तथा संकलित पुस्तक सिख गुरुओं की राष्ट्रीय दृष्टि का लोकार्पण बुधवार को सरदार दयाल सिंह सांध्य महाविद्यालय में संपन्न हुआ। पुस्तक का लोकार्पण डॉ. इकबाल सिंह लालपुरा, दिल्ली सिख गुरुद्वारा मैनेजमेंट कमिटी के मुख्य सलाहकार सरदार परमजीत सिंह चंडोक ने किया तथा पंजाब केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलाधिपति प्रो. जगबीर सिंह ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। इस अवसर पर परमजीत सिंह चंडोक ने कहा कि गुरुओं ने मानवता का संदेश दिया और खालसा पंथ की स्थापना की। देश में पहली बार ऐसी सरकार आई है, जो गुरुओं के दिवसों का उत्सव आयोजित कर रही है। देश की स्वाधीनता के 75 वर्षों में पहली बार इसी सरकार ने करतारपुर साहिब कॉरिडोर खोलकर वहां तक आम जन की पहुंच को सुगम बनाया। वहीं, पंजाब केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलाधिपति प्रो. जगबीर सिंह ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि बंदा बहादुर और राजा रणजीत सिंह तक हम एक रहे हैं। बाद में अंग्रेजों ने हमें अलग करने का षड्यंत्र किया। उन्होंने काहन सिंह नाभा जैसे लोग खड़े किये, जिन्होंने आधे-अधूरे उद्धरणों से फूट डालने का कार्य किया। यह पुस्तक इन सभी षड्यंत्रों का उन्मूलन करती है। इस पुस्तक का मूल भाव है कि सिख समाज भारत का एक अभिन्न अंग रहा है। प्रथम गुरु नानकदेव जी ने भारत को एक समग्र इकाई के रूप में प्रस्तुत किया था। वे पूरे भारत को एक समग्र रूप में देखते थे और तदनुरूप ही उन्होंने विधर्मी आक्रांताओं और उनके अत्याचारों का वर्णन किया। आज के विभाजनकारी दौर में गुरु नानकदेव की शिक्षाओं का पुनर्स्मरण करने की आवश्यकता है। इस बात को ध्यान में रख कर ही प्रस्तुत पुस्तक लिखी गई है। पुस्तक के लेखक स्व. राजेंद्र सिंह जी सिख साहित्य के अप्रतिम विद्वान थे और उन्होंने श्रीराम जन्मभूमि मामले में सर्वोच्च न्यायालय में गवाही देते हुए सिख साहित्य में श्रीराम जन्मभूमि का उल्लेख होने के प्रमाण प्रस्तुत किये थे। इस लोकार्पण कार्यक्रम में जीवन के विविध आयामों में समाज के लिए उल्लेखनीय योगदान के लिए सिख समाज के 14 महत्वपूर्ण व्यक्तित्वों को सम्मानित भी किया गया।

अंग्रेजों ने सिखों को सनातन से लड़ाया : इकबाल सिं

▪ सिख गुरुओं को दिवसों को मनाने वाली पहली सरकार है मोदी सरकार

निष्पक्ष प्रतिदिन | नई दिल्ली

सनातन, जैन, बौद्ध और सिख, इन सभी की माँ एक है। लेकिन अंग्रेजों ने सिख और सनातन में फूट डालने का षड्यंत्र कर समाज में भेद पैदा किया। ये बातें राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग के अध्यक्ष डॉ. इकबाल सिंह लालपुरा ने बुधवार को नई दिल्ली में आयोजित सिख गुरुओं की राष्ट्रीय दृष्टि नामक पुस्तक के लोकार्पण में कहीं। उन्होंने कहा कि गुरुग्रंथ साहिब में लिखा है कि प्रथम गुरु नानक देव जी भगवान विष्णु के ही अवतार हैं। इसलिए गुरु केवल सिखों के नहीं, पूरे भारत के हैं। सिख साहित्य के अनुपम विद्वान रहे स्व. राजेंद्र सिंह जी की लिखी तथा संकलित पुस्तक सिख गुरुओं की राष्ट्रीय दृष्टि का लोकार्पण बुधवार को सरदार दयाल सिंह सांध्य महाविद्यालय में संपन्न हुआ। पुस्तक का लोकार्पण राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग के अध्यक्ष डॉ. इकबाल सिंह लालपुरा, दिल्ली सिख गुरुद्वारा मैनेजमें कमिटी के मुख्य सलाहका सरदार परमजीत सिंह चंडो ने किया तथा पंजाब केंद्री विश्वविद्यालय के कुलाधिप प्रो. जगबीर सिंह ने कार्यक्रम व अध्यक्षता की।

इस अवसर पर परमजीत सिं चंडोक ने कहा कि गुरुओं मानवता का संदेश दिया औ खालसा पंथ की स्थापना की। दे में पहली बार ऐसी सरकार आई जो गुरुओं के दिवसों का उत्स आयोजित कर रही है। देश व स्वाधीनता के 75 वर्षों में पहल बार इसी सरकार ने करतारपु साहिब कॉरिडोर खोलकर वह तक आम जन की पहुँच को सुग बनाया।

लोकार्पण अंग्रेजों ने किया सिखों को सनातन से लड़ाने का षड्यंत्र: इकबाल सिंह लालपुरा

'सिख गुरुओं की राष्ट्रीय दृष्टि' पुस्तक का विमोचन

नई दिल्ली, मेट्रो मीडिया।

सनातन, जैन, बौद्ध और सिख इन सभी की माँ एक है, लेकिन अंग्रेजों ने सिख और सनातन में फूट डालने का षड्यंत्र कर समाज में भेद पैदा किया। ये बातें आज राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग के अध्यक्ष डॉ. इकबाल सिंह लालपुरा जी ने आज नई दिल्ली में आयोजित सिख गुरुओं की राष्ट्रीय दृष्टि नामक पुस्तक के लोकार्पण में कहीं।

उन्होंने कहा कि गुरुग्रंथ साहिब में लिखा है कि प्रथम गुरु नानक देव जी भगवान विष्णु के ही अवतार हैं। इसलिए गुरु केवल सिखों के नहीं, पूरे भारत के हैं।

सिख साहित्य के अनुपम विद्वान रहे स्व. राजेंद्र सिंह जी की लिखी तथा संकलित पुस्तक सिख गुरुओं की राष्ट्रीय दृष्टि का लोकार्पण बुधवार को सरदार दयाल सिंह सांध्य महाविद्यालय में संपन्न हुआ। पुस्तक का लोकार्पण राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग के अध्यक्ष डॉ. इकबाल सिंह लालपुरा, दिल्ली सिख गुरुद्वारा मैनेजमेंट कमिटी के मुख्य सलाहकार सरदार परमजीत सिंह चंडोक ने किया तथा पंजाब केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलाधिपति प्रो.जगबीर सिंह ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की।

इस अवसर पर परमजीत सिंह चंडोक ने कहा कि गुरुओं ने मानवता का संदेश दिया और खालसा पंथ की स्थापना की। देश में पहली बार ऐसी सरकार आई है,जो गुरुओं के दिवसों का उत्सव आयोजित कर रही है। देश की स्वाधीनता के 75 वर्षों में पहली बार इसी सरकार ने करतारपुर साहिब कॉरिडोर खोलकर वहाँ तक आम जन की पहुँच को सुगम बनाया।

पंजाब केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलाधिपति प्रो. जगबीर सिंह ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि बंदा बहादुर और राजा रणजीत सिंह तक हम एक रहे हैं। बाद में अंग्रेजों ने हमें अलग करने का षड्यंत्र किया। उन्होंने काहन सिंह नाभा जैसे लोग खड़े किये, जिन्होंने आधे-अधूरे उद्धरणों से फूट डालने का कार्य किया। यह पुस्तक इन सभी षड्यंत्रों का उन्मूलन करती है।

इस पुस्तक का मूल भाव है कि सिख समाज भारत का एक अभिन्न अंग रहा है। प्रथम गुरु नानकदेव जी ने भारत को एक समग्र इकाई के रूप में प्रस्तुत किया था। वे पूरे भारत को एक समग्र रूप में देखते थे और तदनुरूप ही उन्होंने विधर्मी आक्रांताओं और उनके अत्याचारों का वर्णन किया।

पुस्तक के लेखक स्व. राजेंद्र सिंह सिख साहित्य के अप्रतिम विद्वान थे और उन्होंने श्रीराम जन्मभूमि मामले में सर्वोच्च न्यायालय में गवाही देते हुए सिख साहित्य में श्रीराम जन्मभूमि का उल्लेख होने के प्रमाण प्रस्तुत किये थे। इस लोकार्पण कार्यक्रम में जीवन के विविध आयामों में समाज के लिए उल्लेखनीय योगदान के लिए सिख समाज के 14 महत्त्वपूर्ण व्यक्तित्वों को सम्मानित भी किया गया सम्मानित होने वालों में यदविंदर सिंह (शहीद ए आजम भगत सिंह के प्रपौत्र) रंजीत कौर, डॉ.सुरजीत कौर,डॉ. हरबंस कौर इंद्र देव सिंह मुसाफिर, (सुप्रसिद्ध व्यवसायी), जस्टिस गुरिंदर सिंह (से नि), पद्मश्री जितेंद्र सिंह शंटी, (संस्थापक शहीद भगत सिंह सेवा दल), आर पी सिंह, पूर्व विधायक एवं समाज सेवी , बलदेव सिंह ढिल्लो (समाज सेवी), गुरमीत सिंह (लेखक एवं ज्योतिषी) युवा नेता रणधीर सिंह काले,अर्जुन पाल सिंह मारवाह (समाजसेवी) हैं तथा लाजपत नगर में पार्षद के रूप में आम जनता को सेवाएं दे रहे हैं।

कार्यक्रम में दिल्ली गुरुद्वारा प्रबंध कमिटी,राष्ट्रीय सिख संगत के पदाधिकारियों तथा सदस्यों सहित बड़ी संख्या में सिख समाज के महत्त्वपूर्ण व्यक्ति उपस्थित थे।

अंग्रेजों ने किया सिखों को सनातन से लड़ाने का षड्यंत्र : लालपुरा

सिख गुरुओं की राष्ट्रीय दृष्टि नामक पुस्तक का लोकार्पण

सनातन, जैन, बौद्ध और सिख, इन सभी की मां एक है, लेकिन अंग्रेजों ने सिख और सनातन में फूट डालने का षड्यंत्र कर समाज में भेद पैदा किया। यह कहना है कि राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग के अध्यक्ष डॉ. इकबाल सिंह लालपुरा का। बुधवार को दिल्ली में आयोजित सिख गुरुओं की राष्ट्रीय दृष्टि नामक पुस्तक के लोकार्पण में लालपुरा ने यह बातें कहीं। उन्होंने कहा कि गुरुग्रंथ साहिब में लिखा है कि प्रथम गुरु नानक देव जी भगवान विष्णु के ही अवतार हैं। इसलिए गुरु केवल सिखों के नहीं, पूरे भारत के हैं। सिख साहित्य के अनुपम विद्वान रहे स्व. राजेंद्र सिंह की लिखी तथा संकलित पुस्तक सिख गुरुओं की राष्ट्रीय दृष्टि का लोकार्पण बुधवार को सरदार दयाल सिंह सांध्य महाविद्यालय में संपन्न हुआ। पुस्तक का लोकार्पण डॉ. इकबाल सिंह लालपुरा, दिल्ली सिख गुरुद्वारा मैनेजमेंट कमिटी के मुख्य सलाहकार सरदार परमजीत सिंह चंडोक ने किया तथा पंजाब केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलाधिपति प्रो. जगबीर सिंह ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। इस अवसर पर परमजीत सिंह चंडोक ने कहा कि गुरुओं ने मानवता का संदेश दिया और खालसा पंथ की स्थापना की। देश में पहली बार ऐसी सरकार आई है, जो गुरुओं के दिवसों का उत्सव आयोजित कर रही है। देश की स्वाधीनता के 75 वर्षों में पहली बार इसी सरकार ने करतारपुर साहिब कॉरिडोर खोलकर वहां तक आम जन की पहुंच को सुगम बनाया। वहीं, पंजाब केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलाधिपति प्रो. जगबीर सिंह ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि बंदा बहादुर और राजा रणजीत सिंह तक हम एक रहे हैं। बाद में अंग्रेजों ने हमें अलग करने का षड्यंत्र किया। उन्होंने काहन सिंह नाभा जैसे लोग खड़े किये, जिन्होंने आधे-अधूरे उद्धरणों से फूट डालने का कार्य किया। यह पुस्तक इन सभी षड्यंत्रों का उन्मूलन करती है। इस पुस्तक का मूल भाव है कि सिख समाज भारत का एक अभिन्न अंग रहा है। प्रथम गुरु नानकदेव जी ने भारत को एक समग्र इकाई के रूप में प्रस्तुत किया था। वे पूरे भारत को एक समग्र रूप में देखते थे और तदनुरूप ही उन्होंने विधर्मी आक्रांताओं और उनके अत्याचारों का वर्णन किया। आज के विभाजनकारी दौर में गुरु नानकदेव की शिक्षाओं का पुनस्मरण करने की आवश्यकता है। इस बात को ध्यान में रख कर ही प्रस्तुत पुस्तक लिखी गई है। पुस्तक के लेखक स्व. राजेंद्र सिंह जी सिख साहित्य के अप्रतिम विद्वान थे और उन्होंने श्रीराम जन्मभूमि मामले में सर्वोच्च न्यायालय में गवाही देते हुए सिख साहित्य में श्रीराम जन्मभूमि का उल्लेख होने के प्रमाण प्रस्तुत किये थे। इस लोकार्पण कार्यक्रम में जीवन के विविध आयामों में समाज के लिए उल्लेखनीय योगदान के लिए सिख समाज के 14 महत्वपूर्ण व्यक्तित्वों को सम्मानित भी किया गया।

धन्यवाद